# संरचनावाद

**Wilhelm Maximilian Wundt, (1832-1920) –**

जन्म – जर्मनी में, आर्थिक स्थिति कमजोर, शिक्षा-दीक्षा [illegible]-पी०एच०डी० तथा एम०डी० – हिडेलबर्ग विश्वविद्यालय

**Books**

- Contributions to the Theory of Sensory Perception — 1862
- Principle of Physiological Psychology – 1873-74
- जर्नल Philosophische Studien का प्रकाशन – 1881
- Outline of Psychology – 1886.
- Folke Psychology — 1900
- 1920 में उनकी मृत्यु.

1858 में - हरमान हेल्महोल्ट्ज के प्रयोगशाला में सहायक
1871 में - हिडेलबर्ग विश्वविद्यालय में नियुक्ति Salaried post पर
1872 में - उनकी शादी हुई।
1875 में - लिपजिग विश्वविद्यालय में नियुक्ति - दर्शनशास्त्र विभाग के अध्यक्ष पद पर हुई।
1917 में लिपजिग विश्वविद्यालय से अवकाश ग्रहण, इसी विश्वविद्यालय में 1879 में पहला मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला की स्थापना जो Psychological Institute के नाम से लोकप्रिय हुआ।

पुस्तक Principle of Physiological Psychology (1873-74) में मनोविज्ञान को एक स्वतंत्र प्रयोगात्मक शास्त्र के रूप में स्थापित करने का पर्याप्त दावा प्रस्तुत किया गया। जिसके कारण लोकप्रिय हुआ।

- Kraeplin, Lehmann तथा Kulpe - प्रमुख विदेशी छात्र.
- अमेरिका से आने वाले छात्रों में - J.M. Cattell, G.S. Hall, Edward Scripture, तथा Charles Judd आदि महत्वपूर्ण थे।
- E.B. Tichener, तथा C. Spearman ब्रिटेन से आने वाले छात्रों में से महत्वपूर्ण छात्र थे।

→ बाद में Tichener ने अमेरिका के कार्नेल विश्वविद्यालय में Wundt के विचारों को अधिक परिशुद्ध करते हुए एक स्कूल की स्थापना की जिसे संरचनावाद (Structuralism) की संज्ञा दी गयी।

**Note:-** Father of Experimental Psychology – **Wilhelm Wundt**

Scanned with CamScanner

## वुण्ट का मनोविज्ञान में योगदान –

– वुण्ट ने मनोविज्ञान को क्रमबद्ध एवं प्रयोगात्मक विज्ञान का दर्जा दिया।

### वुण्ट का क्रमबद्ध मनोविज्ञान –

वुण्ट के क्रमबद्धता की झलक उनके प्रसिद्ध पुस्तक Outline of Psychology में दिखती है। इस पुस्तक में उन्होंने क्रमबद्ध मनोविज्ञान के मौलिक तत्वों का उल्लेख निम्नांकित 5 भागों में केंद्रित किया है –

- मनोविज्ञान की परिभाषा एवं विषय-वस्तु
- संबंध के नियम
- मनोविज्ञान की विधि
- संप्रत्यक्षण या आत्मबोध (Apperception)
- मन-शरीर समस्या (Mind-Body Problem)

### – मनोविज्ञान की परिभाषा एवं विषय-वस्तु –

– वुण्ट के लिए मनोविज्ञान अनुभूति (Experience) का विज्ञान है।

तात्कालिक अनुभूति | मध्यवर्ती अनुभूति

– तात्कालिक अनुभूति से तात्पर्य स्वयं की अनुभूति से था। जैसे – दाँत में दर्द का होना।

मध्यवर्ती अनुभूति का तात्पर्य वैसी अनुभूति से था जिसके सहारे व्यक्ति किसी चीज की स्थिति निर्धारित कर पाता है। जैसे – दर्द के आधार पर दाँत के संभावित कोटर (Cavity) का पता चलना।

→ वुण्ट ने स्पष्ट किया कि मनोविज्ञान का विषय-वस्तु तात्कालिक अनुभूति (Immediate experience) है न कि मध्यवर्ती अनुभूति।

→ वुण्ट ने तात्कालिक अनुभूति या चेतन अनुभूति (Conscious experience) के परमाणविक स्वरूप (atomistic nature) पर बल डाला और यह बतलाया कि चेतन अनुभूति को दो मनोवैज्ञानिक तत्वों या परमाणु (atoms) में विश्लेषित किया जा सकता है।

- संवेदन (Sensation) – चेतना का वस्तुनिष्ठ तत्व
- भाव (Feelings) – चेतना का आत्मनिष्ठ तत्व



Scanned with CamScanner

APPOINTMENTS

- ज्ञानेन्द्रियों के कार्य के संपन्न होने से व्यक्ति को संवेदन होता है।
- जब संवेदन आपस में एक जुट होकर मिल जाते हैं, तो इसे प्रतिमा (image) कहा जाता है। प्रतिमा को चेतन का स्वतंत्र तत्व नहीं माना है।
- भाव के तत्व किसी एक ज्ञानेन्द्रिय से उत्पन्न नहीं होते हैं।
  वुण्ट ने भाव के तीन विमा बतलाएँ हैं —
  - उत्तेजन - शांत (Excitement - calm)
  - तनाव - शिथिलता (Tension - relaxation)
  - सुख - दुःख (Pleasure - displeasure)

  उनका मानना था कि प्रत्येक भाव को इस त्रिविमीय स्थान में रखा जा सकता है। जिसे भाव का त्रिविमीय सिद्धान्त (Tridimensional theory of feelings) कहा जाता।

- वुण्ट के अनुसार संवेदन तथा भाव के दो मुख्य विशेषताएँ होती हैं — गुण तथा तीव्रता। इनके द्वारा संवेदन की पहचान कर ली जाती है।
- वुण्ट के अनुसार संवेदन तथा भाव के तत्व आपस में एक विशेष यौगिक जिसे मानसिक यौगिक कहा जाता, में संगठित हो जाते हैं जिसका निर्माण सरल संवेदनों या सरल भावों या दोनों के मिलने से होता है। जैसे — विचार (idea) तथा संवेग (emotion) जैसे — फूल का विचार कई संवेदनों जैसे - गंध, रंग, कोमलता आदि के मिलने से उत्पन्न होता है।

  इसीप्रकार, संवेग विभिन्न भावों के मिलने से उत्पन्न होता है जैसे - क्रोध की अनुभूति जो कई तरह के भावों का एक यौगिक है और इससे क्रोध उत्पन्न करने वाले वस्तु के प्रति प्रतिक्रिया करने की इच्छा उत्पन्न हो सकती है।

## - संबंध का नियम —

- वुण्ट ने इस बिंदु पर भी विचार किया कि चेतन अनुभूति के तत्व किस तरह और कौन - कौन से नियम से संयोजित होते हैं? अपने प्रयोगात्मक अध्ययनों के आधार पर उन्होंने स्पष्ट किया कि चेतन के तत्व साहचर्य के आधार से संयोजित होते हैं।

Scanned with CamScanner

कई तत्व एक मौलिक के रूप में इस प्रकार संयोजित हो सकते हैं कि एक तत्व की उपस्थिति से अपने आप दूसरा तत्व उपस्थित हो जाये या फिर एक विचार के चेतना में आने पर दूसरा विचार अपने आप चेतना में आ सकता है। साहचर्य में आत्मसात्करण तथा जटिलन दोनों सम्मिलित होते हैं। आत्मसात्करण में समानता या विरोध के आधार पर तत्वों का साहचर्य स्थापित होता है। जटिलन से तात्पर्य दो भिन्न ज्ञानेन्द्रियों से प्राप्त संवेदनों का साहचर्य होने से होता है।

## — मनोविज्ञान की विधि —

— वुण्ट ने यह बतलाया कि चेतन अनुभूति के अध्ययन की उपयुक्त विधि प्रयोग एवं अन्तर्निरीक्षण है। जिसके द्वारा व्यक्ति चेतन अनुभूति का विश्लेषण यह जानने के लिए करता है कि इसके कौन-कौन से तत्व हैं जो संयोजित होकर अनुभूति का निर्माण किये हैं। वुण्ट ने यह भी कहा कि इसके लिए एक प्रशिक्षित अन्तर्निरीक्षक का होना अनिवार्य है, जिनको कुछ निम्नलिखित नियमों का पालन करना आवश्यक होता है—

(i) अन्तर्निरीक्षक को यह निश्चित करना चाहिए कि वह प्रक्रिया कहाँ से प्रारंभ कर रहा है।
(ii) वह strained attention बनाये रखने के योग्य हो।
(iii) प्रेक्षण का स्वरूप ऐसा हो कि उसे दोहराया जा सके।
(iv) निरीक्षण के दौरान हालात ऐसे हों कि उद्दीपनों के गुणों में परिवर्तन करना संभव हो।

इन नियमों से स्पष्ट है कि वुण्ट के लिए आत्मनिरीक्षण का आधार प्रयोग होना चाहिए ताकि प्रयोगकर्ता उद्दीपन की अवस्थाओं में परिवर्तन कर सके और अन्तर्निरीक्षक द्वारा उन परिवर्तनों से उत्पन्न अनुभूतियों का प्रेक्षण किया जा सके। इसका अर्थ यह हुआ कि वुण्ट का अन्तर्निरीक्षण एक तरह का प्रयोगात्मक अन्तर्निरीक्षण था।

Scanned with CamScanner

## — आत्मबोध (Apperception) — या संप्रत्यक्षण —

Boring, 1950 ने यह स्पष्ट किया है कि वुण्ट के लिए संप्रत्यक्षण के तीन महत्वपूर्ण पहलू हैं —

- एक प्रक्रम के रूप में संप्रत्यक्षण
- संज्ञान के रूप में संप्रत्यक्षण तथा
- क्रिया के रूप में संप्रत्यक्षण.

## — मन-शरीर समस्या (Mind-body Problem) —

वुण्ट का मत था कि मन तथा शरीर एक-दूसरे के समानान्तर होता है, जिसे एक दूसरे के साथ अन्तःक्रिया नहीं करते हैं। इसे मनोदैहिक समानान्तरवाद कहा जाता है। अतः, वुण्ट के लिए मन शरीर पर आधारित नहीं होता है और इसका अध्ययन सीधे किया जा सकता है।

कहा जा सकता है कि वुण्ट के क्रमबद्ध मनोविज्ञान का स्वरूप संवेदनवादी, परमाणुवादी, विश्लेषणवादी, साहचर्यवादी, प्रयोगात्मक अन्तर्निरीक्षणवादी, तथा संरचनावादी था। संवेदनवादी इसलिए क्योंकि इन्होंने संपूर्ण अनुभूति को संवेदन से ही उत्पन्न माना। परमाणुवादी इसलिए क्योंकि चेतन अनुभूति की रचना दो तत्वों संवेदन तथा भाव से होती है। विश्लेषणवादी इसलिए क्योंकि मनोविज्ञान का लक्ष्य चेतन अनुभूति का विश्लेषण कर उसके तत्वों का पता लगाना था। साहचर्यवादी इसलिए क्योंकि चेतन अनुभूति के दोनों तत्वों में साहचर्य की भूमिका को उन्होंने प्रधान बतलाया। अन्तर्निरीक्षणवादी इसलिए क्योंकि अन्तर्निरीक्षण को मनोविज्ञान का सबसे महत्वपूर्ण विधि के रूप में स्वीकार किया। प्रयोगात्मक इसलिए क्योंकि उन्होंने चेतन अनुभूति का अध्ययन प्रयोग के माध्यम से करने पर बल डाला। संरचनावादी इसलिए कहा गया क्योंकि उनके मनोविज्ञान का मुख्य उद्देश्य चेतन अनुभूति की संरचना के तत्वों का खोज करना था। यही कारण है कि इनके मनोविज्ञान को अन्तर्वस्तु मनोविज्ञान (Content Psychology) भी कहा जाता है।

Scanned with CamScanner